वन्दना

[१]

नन्दक नन्दन कदम्बक तरु-तर
धिरे धिरे मुरलि बजाव।
समय सँकेत-निकेतन बइसल
वेरि वेरि बोलि पठाव ॥२॥
सामरि, तोरा लागि
अनुखन विकल मुरारि ॥३॥
जमुनाक तिर उपवन उदवेगल
फिरि फिरि ततहि निहारि।
गोरस बेचए अवइत जाइत
जनि जनि पुछ बनमारि ॥५॥

१—नन्दक नन्दन = नन्द के बेटे श्रीकृष्ण। तर = तले, नीचे। २—सँकेत-निकेतन = मिलने का निर्दिष्ट स्थान। बइसल = बैठे हुए। बेरि बेरि = बार-बार। (सकेत-स्थान में बैठकर मिलन का समय आया जान) बार बार बुला रहे हैं (वंशी मे पुकार रहे हैं)—"नामसमेतम् कृत-सकेतम् वादयते मृदुवेणुम्"—गीतगोविन्द। ३—सामरि = श्यामा, सुन्दरी,—गीते सुखोष्णसर्वांगी ग्रीष्मे च सुखशीतला। तप्तकाञ्चनवर्णाभा सा स्त्री श्यामेतिकथ्यते॥' तोरालागि = तुम्हारे वास्ते। अनुखन—प्रतिक्षण।

४—तिर = तट। उदवेगल = उद्विग्न हुआ, व्याकुल। ततहि = उसी तरफ। जनि जनि = प्रत्येक स्त्री से (पुल्लिग जन, स्त्री० जनि) यमुना के किनारे उपवन मे (भ्रमण करते हुए) व्याकुल होकर पुन-पुन उसी

तोहे मतिमान, सुमति, मधुसूदन
वचन सुनह किछु मोरा।
भनइ विद्यापति सुन वरजौवति
वन्दह नन्द-किसोरा ॥७॥

[२]

राधा की वन्दना

देख देख राधा रूप अपार।
अपुरुव के विहि आनि मिलाओल
खिति-तल लावनि-सार ॥१॥
अगहि अंग अनँग मुरछायत
हेरए पड़ए अथीर।
मनमथ कोटि-मथन करु जे जन
से हेरि महि-मधि गीर ॥४॥

ओर (तुम्हारे आगमन-पथ की ओर) देखते हैं, और दूध-दही बेचने को आने-जानेवाली प्रत्येक रमणी से वनमाली श्रीकृष्ण (तुम्हारे विषय में) पूछते हैं। ६—मतिमान = अनुरक्त। हे सुमति! मेरी कुछ बातें सुनो, मधुसूदन तुमपर अनुरक्त हैं। ७—भनइ = कहते हैं। जौवति = युवती। वन्दह—वंदना करो।

"ते सुकृती रस-सिद्ध कवि, वंदनीय जग माहि।
जिनके सुजस-सरीर कहँ, जरा मरन-भय नाहि॥"

१—अपुरुव = अपूर्व। विहि = विधि, ब्रह्मा। आनि मिलाओल = ला मिलाया, रच दिखाया। खिति = क्षिति, पृथ्वी। लावनि—लावण्य। ३—अनँग = कामदेव। हेरए = देखकर। अथीर = अस्थिर, चंचल। ४—मनमथ = कामदेव। मधि = में। जो करोड़ों कामदेवों का (अपने सौंदर्य

सामर बरन, नयन अनुरजित,
जलद-जोग फुल कोका।
कट कट बिकट ओठ-पुट पाँडरि
लिचुर-फेन उठ फोका ॥६॥
घन घन घनए घुघुर कत बाजय,
हन हन कर तुअ काता।
विद्यापति कवि तुअ पद सेवक,
पुत्र बिसरु जनि माता ॥८॥

कितना हो। मेलल = रक्खा। कूड़ा कैल = चूर-चूर कर दिया। अनुर जित = रँगा हुआ, लाल। जलद-जोग फूल कोका = बादल मे कमल फूले हों। पाँडरि = एक लाल फूल। फोका = बुदबुद्। ७—काता = कत्ता, कटार।

वय:-सन्धि

[४]

सैसव जौवन दुहु मिलि गेल।
स्रवन क पथ दुहु लोचन लेल ॥२॥
वचन क चातुरि लहु-लहु हास।
धरनिये चाँद कएल परगास ॥४॥

मुकुर लई अव करई सिंगार।
सखि पूछइ कइसे सुरत-विहार ॥६॥
निरजन उरज हेरइ कत बेरि।
हसइ से अपन पयोधर हेरि ॥८॥
पहिल बदरि-सम पुन नवरंग।
दिन-दिन अनँग अगोरल अंग ॥१०॥
माधव पेखल अपुरुव बाला।
सैसव जौवन दुहु एक भेला ॥११॥
विद्यापति कह तुहु अगेआनि।
दुहु एक जोग हइ के कह सयानि ॥१४॥

१—सैसव = शिशुता, बचपन। जौवन = जवानी। २—दोनो आंखों ने कानो की राह पकडी = कटाक्ष करना प्रारम्भ किया। ३—लहु = लघु, मंद। हास = हँसी। ४—परगास = प्रकाश। ५—मुकुर = आईना। ६—सुरत-विहार = काम-क्रीड़ा। ७—निरजन = एकान्त में। उरज = पयोधर = स्तन। हेरइ = देखती है। "स्मितं किंचिद्वक्रं सरलतरलो दृष्टिविभव। परिस्पन्दो वाचामपि नवविलासोक्तिसरस। गतीनामारम्भ। किसलयितलीलापरिकर। स्पृशन्त्यास्तारुण्यं किमिह न हि रम्यं मृगदृश ॥" ९—बदरि = बेर का फल। नवरंग = नारंगी, नीबू

[५]

सैसव जौवन दरसन भेल।
दुहु दल-बले दन्द परि गेल ॥२॥
कबहु बाँधय कच कबहु बिथारि।
कबहु झाँपय अँग कबहु उघारि ॥४॥
अति थिर नयन अथिर किछु भेल।
उरज - उदय - थल लालिम देल ॥६॥
चंचल चरन, चित चंचल भान।
जागल मनसिज मुदित नयान ॥८॥
विद्यापति कह सुनु वर कान।
धैरज धरह मिलायब आन ॥१०॥

कुच, पहले बैर के समान छोटे थे, पुन नारंगी-से हुए। १०—अनँग = कामदेव। अगोरल=पहरा दिया। ११—पेखल = देखा। अपुरुब=अपूर्व। १२—भेला = भया, हुआ। १४—के कह = कौन कहता है ?

२—दन्द = द्वन्द्व = युद्ध। परि गेल = पड गया, शुरू हो गया, ठन गया। दोनो (शैशव और यौवन) के सैन्यबल में द्वन्द्व युद्ध छिड गया। ३—कच = केश। बिथारि = खोल देना। ४—अँग = देह, (यहाँ छाती)। ५—अथिर = चंचल। ६—उरज = कुच। उदयथल—उगने का स्थान। देल = दिया। कुचो के उत्पन्न होने के स्थान में लालिमा छा गई। ७—भान = मालूम होना। पैर चंचल थे ही, अब चित्त भी चंचल मालूम होता है। ८—मुदित = बंद। नयान=आँखे। कामदेव जाग तो गया, पर उसकी आँखें बन्द ही है, नहीं खुलतीं। ९—कान = कान्ह, कृष्ण। १०—आन = लाकर।

[६]

सैसव जौवन दरशन भेल।
दुहु पथ हेरइत मनसिज गेल ॥२॥
मदन क भाव पहिल परचार।
भिन जन देल भिन्न अधिकार ॥४॥
कटि क गौरव पाओल नितम्ब।
एक क खीन अओक अवलम्ब ॥६॥
प्रगट हास अब गोपत भेल।
उरज प्रगट अब तन्हिक लेल ॥८॥
चरन चपल गति लोचन पाव।
लोचन क धैरज पदतल जाव ॥१०॥
नव कविसेखर कि कहइत पार।
भिन भिन राज भिन्न वेवहार ॥१२॥

२—मनसिज=काम। दोनो को राह में देखते हुए कामदेव ने (बाला के शरीर में) गमन किया। ३—पहिल परचार=प्रथम प्रचारित हुआ। ५—कटि क=कमर का। गौरव=गुरुता। नितम्ब—चूतड़। ६—खीन=क्षीण, पतला। अओक=अन्य का=दूसरे का। ७, ८—गोपत=गुप्त। तन्हिक=उसका। प्रकट हँसी अब गुप्त हुई और उसकी प्रकटता अब कुचों ने ले ली। १०—धैरज=धीरता। 'काव्यप्रकाश' में कहा है—श्रोणीबन्धस्त्यजति तनुता सेवते मध्यभागः। पद्भ्यां मुक्तास्तरलगतयः संश्रिता लोचनाभ्याम् ॥ वक्षः प्राप्तं कुचसचिवतामद्वितीयन्तु वक्त्रम्। सद्गात्राणां गुणविनिमयः कल्पितो यौवनेन। ११—नव कविसेखर=विद्यापति का उपनाम।

[७]

किछु किछु उतपति अकुर भेल ।
चरन-चपल-गति लोचन लेल ॥३॥

अब सब खन रह आँचर हात ।
लाजे सखिगन न पुछए बात ॥४॥

कि कहब माधव बयस क सधि ।
हेरइत मनसिज मन रहु बधि ॥६॥

तइअओ काम हृदय अनुपाम ।
रोपल घट ऊचल कए ठाम ॥८॥

सुनइत रस-कथा थापए चीत ।
जइसे कुरंगिनी सुनए सँगीत ॥१०॥

सैसव जौवन उपजल बाद ।
केओ न मानए जय अवसाद ॥१२॥

बिद्यापति कौतुक बलिहारि ।
सैसव से तनु छोड़नहि पारि ॥१४॥

१—अंकुर = कुचो के अंकुरे । ३—खन = क्षण । हात = हाथ । ५-६, माधव ! वय -सन्धि (की बाते) क्या कहूँ—देखते ही कामदेव का मन भी बँध गया । ७-८ तथापि (बन्दी होने पर भी) काम ने उसके अनुपम हृदय पर घट स्थापित कर उस स्थान को ऊँचा कर दिया । ९—थापए = स्थापित करती है । १०—कुरगिनी = हरिणी । ११—उपजल बाद = होड मची । १२—केओ = कोई । अवसाद = पराजय । १४—शैशव को उसका शरीर छोडना ही पड़ेगा ।

[८]

पहिल बदरि कुच पुन नवरंग ।
दिन दिन बाढ़ए पिड़ए अनंग ॥१॥
से पुन भए गेल बीजकपोर ।
अब कुच बाढ़ल सिरिफल जोर ॥४॥
माधव पेखल रमनि संधान ।
घाटहि भेटल करत सिनान ॥६॥
तनसुक सुवसन हिरदय लागि ।
जे पुरुख देखब तेकर भागि ॥८॥
उर हिल्लोलित चाँचर केस ।
चामर झाँपल कनक महेस ॥१०॥
भनइ विद्यापति सुनह मुरारि ।
सुपुरुख बिलसए से बरनारि ॥१२॥

१—बदरि = बेर (फल) । नवरंग = नारंगी । २—पिडए = पीड़ा देता है । ३—बीजकपोर = बीजपूर, बड़ा (टाभ) नीबू ; जैसे बीज क्रमशः बढ़ते-बढ़ते पोर (वृक्ष की मुटाई और गाँठ) बनता है उसी तरह कुच भी दृढ़ और मोटे हो चले । ४—सिरिफल = श्रीफल, बेल । १-४, एक संस्कृत श्लोक है—उद्भेदं प्रतिपद्य पक्वबदरीभावं समेता क्रमात् । पुन्नागाकृतिमाप्य पूगपदवीमारुह्य बिल्वश्रियम् ॥ लब्ध्वा तालफलोपमां च ललितामासाद्य भूयोधुना । चंचत् काञ्चनकुम्भजम्भनमिमावस्याः स्तनौ बिभ्रत ॥ ५—पेखल = देखा । सिनान = स्नान । तनसुक = एक प्रकार का महीन कपड़ा । हिल्लोलित = झूलता हुआ । चाँचर = चंचल । ६—१०—हृदय पर झाँझरी से बने हुए बाल डोल रहे हैं, मानो सोने के महादेव को चँवर से ढक दिया हो । १२—बिलसए = विलास करें ।

[९]

खने खन नयन कोन अनुसाई।
खने खन बसन धूलि तनु भरई ॥२॥
खने खन दसन-छटा छुट हास।
खने खन अधर आगे गहु बास ॥४॥
चउँकि चलए खने खन चलु मन्द।
मनमथ-पाठ पहिल अनुबन्ध ॥६॥
हिरदय-मुकुल हेरि हेरि थोर।
खने आँचर दए खने होए भोर ॥८॥
बाला सैसव तारुन भेट।
लखए न पारिअ जेठ कनेठ। १०॥
विद्यापति कह सुन बर कान।
तरुनिम सैसव चिन्हइ न जान ॥१२॥

१—खने खन = क्षण-क्षण। क्षण-क्षण में आंखें कोण का अनुसरण करती हैं—कटाक्ष करती हैं। २—क्षण-क्षण में अस्तव्यस्त वस्त्र (चंचल धूलि में गिरकर) शरीर को धूलि से भरते हैं। ३—दसन = दांत। हास = हँसी। ४—अधर = होठ। बास = वस्त्र। ६—अनुबन्ध = भूमिका। ७—हिरदय-मुकुल = हृदय की कली, कुच। ९—भोर = भूल जाना) ९-१०—तारुन = तरुणाई, जवानी। कनेठ = कनिष्ठ = छोटा। बाला के शरीर में बचपन और जवानी की भेंट हुई है—मुकाबला हुआ है। इन दोनों में कौन बड़ा और कौन छोटा (कौन निर्बल और कौन सबल) है, यह जान नहीं पड़ता। ११—कान = कान्ह, कृष्ण। १२—तरुनिम = जवानी।

नखशिख

[१०]

पीन पयोधर दूबरि गता।
मेरु उपजल कनक - लता ॥२॥
ए कान्हु ए कान्हु तोरि दोहाई।
अति अपूरुब देखलि साई ॥४॥
मुख मनोहर अधर रंगे।
फूललि मधुरी कमल संगे ॥६॥
लोचन - जुगल भृग अकारे।
मधु क मातल उड़ए न पारे ॥८॥
भनॅह क कथा पूछह जनू।
मदन जोड़ल काजर - धनू ॥१०॥
भन विद्यापति दूतिवचने।
एत सुनि कान्हु कएल गमने ॥१२॥

१-२, पीन=पुष्ट। पयोधर=कुच गता=गात, शरीर। मेरु=सुमेरु पर्वत। दुबली (तन्वी) के शरीर में पुष्ट कुच है मानो सोने की लता (देह) में सुमेरु पर्वत (कुच) उत्पन्न हुआ हो। ४—अपूरुब=, अपूर्व। साई=उसे। ५—६, अधर=ओष्ठ। रंगे=रंगे हुए, लाल। मधुरी=एक तरह का सुन्दर लाल फूल जो मिथिला में विशेष होता है। सुन्दर मुख पर रंगीन (लाल) अधर है, मानो कमल के फूल के साथ मधुरी फूली हो। ७-८—भृंग भौंरा। मधु क मातल=मधु पीकर मस्त बना। (उस मुख-कमल में) दोनो लोचन भौंरे के समान हैं जो (मुख-कमल का) मधु पीकर मस्त होने से उड नहीं सकते।

[११]

कि आरे ! नव जौवन अभिरामा ।
जत देखल तत कहए न पारिअ
छओ अनुपम एक ठामा ॥२॥
हरिन इन्दु अरविन्द करिनि हेम
पिक बूझल अनुमानी ।
नयन वदन परिमल गति तन रुचि
अओ अति सुललित बानी ॥४॥
कुच जुग परसि चिकुर फुजि पसरल
ता अरुझायल हारा ।
जनि सुमेरु ऊपर मिलि ऊगल
चाँद बिहिनु सब तारा ॥६॥

१—२, अहा, कैसी सुन्दर नई जवानी है ! जैसा देखा, वैसा कह नही सकता, छः अनुपम (पदार्थ) एक ही स्थान पर है । ३—इन्दु = चन्द्र । अरविन्द = कमल । करिनि = हथिनी । हेम = सोना । पिक = कोयल । ४—परिमल = सुगन्धि । तनु रुचि = शरीर की कान्ति । हरिन, चन्द्र, कमल, हथिनी, सोना, कोयल—ये छः क्रमश. आंख, मुख, शरीर की सुगन्धि, मस्तानी चाल, शरीर की कान्ति और मीठी बोली के उपमान है । ५—६, चिकुर = केश । फुजि = खुलकर । बिहिनु = विहीन । दोनो कुचो से स्पर्श करते हुए केश खुलकर छिटके हुए है जिनसे (मुक्ता की) माला उरझी हुई है, मानो, सुमेरु पर्वत पर चन्द्रमा को छोडकर (क्योकि केश रूपी अंधकार भी है !) सब तारे मिलकर उगे हो । ७—लोल = चचल । कपोल = गाल । अधर = ओष्ठ ।

लोल कपोल ललित मनि-कुंडल
अधर बिम्ब अध जाई।
भौंह भ्रमर, नासापुट सुन्दर
से देखि कीर लजाई॥८॥
भनइ विद्यापति से वर नागरि
आन न पावए कोई।
कंसदलन नारायन सुन्दर
तसु रंगिनी पए होई॥१०॥

बिम्ब = बिम्बफल (लाल होता है)। अध = अध, नीचे। अधर बिम्ब अध जाई = ओष्ठ की लालिमा देख बिम्बफल नीचे जाता है = हारा मालूम होता है। ८ भ्रमर = भौंरा। भौंह भ्रमर = भौंहें, भ्रमर के समान, काली हैं। नासापुट = नाक। कीर = सुग्गा। १०—कंसदलन नारायण = (१) मिथिला के राजा (२) श्रीकृष्ण। तसु = उसका। रंगिनी = स्त्री।

"इश्क को दिल में दे जगह 'अकबर'
इल्म से शायरी नहीं आती।"

(१२)

माधव की कहब सुन्दरि रूपे।
कतेक जतन विहि आनि समारल
देखल नयन सरूपे ।।२।।
पल्लव-राज चरन-जुग सोभित
गति गजराज क भाने।
कनक-कदलि पर सिंह समारल
तापर मेरु समाने ।।४।।
मेरु ऊपर दुइ कमल फुलायल
नाल विना रुचि पाई।
मनि-मय हार धार बहु सुरसरि
तओ नहि कमल सुखाई ।।६।।

(नोट—"अद्‌भुत एक अनूपम बाग" शीर्षक सूरदास का एक प्रसिद्ध पद्य है। साहित्य-संसार में उसकी बड़ी प्रशंसा होती है। सूरदास से डेढ सौ वर्ष पहले रची गई यह कविता पढ़कर, पाठक, विद्यापति की प्रतिभा का अन्दाजा लगावें !)

१—की=क्या। २—बिहि=विधि, ब्रह्मा। सरूपे=सत्य प्रत्यक्ष। ३—पल्लवराज=कमल। ४—कनक-कदली—सोने के केले का थम्भ (जांघ की उपमा)। सिंह=(कटि की उपमा)। मेरु=पहाड़ (उभड़ी हुई छाती)। ५—दुइ कमल=दो कमल (दोनो कुच)। नाल=डंटी। रुचि=शोभा। ६—(कुचों पर) मणि माला रूपी गंगा की धारा बह रही है, इसीसे—उसके स्रोत में —(बिना नाल के भी दोनो कुच रूपी) कमल नहीं मुरझाते।

अधर विम्ब सन, दसन दाड़िम-बिजु
रवि ससि उगथिक पासे।
राहु दूर बस नियरो न आवथि
तै नहि करथि गरासे ।।८।।
सारँग नयन बयन पुनि सारँग
सारँग तसु समधाने ।
सारँग ऊपर उगल दस सारँग
केलि करथि मधुपाने ।।१०।।
भनइ विद्यापति सुन वर जौवति
एहन जगत नहि आने ।
राजा सिवसिंघ रूपनरायन—
लखिमा देइ पति भाने ।।१२।।

७—अधर=ओष्ठ। विम्बफल। सन=ऐसा। दसन=दांत। दाड़िम=अनार। बिजु=बीज, दाना। रवि ससि उगथिक पासे=सूर्य-चन्द्र एक साथ उगे हैं (चन्द्रमा ऐसे मुख में बाल सूर्य-सा लाल सिंदूर है)। ८—राहु=(केश की उपमा)। नियरो=निकट। ९—सारँग=(१) हरिण। सारँग=(२) कोयल। सारँग=(३) कामदेव। सारँग तसु समधाने=उसके सधान में-कटाक्ष में—काम बसता है। १०—सारँग=(४) कमल (ललाट)। दस=(यहाँ बहुवाची)। सारँग=(५) भौंरा (केशों के लटके हुए गुच्छे)। मधुपाने=रस पीकर। (मुखरूपी) कमल पर भौंरे (रूपी लटें लटकी) हैं, जो मधुपान कर केलि कर रहे है। एहन=ऐसा। आने=दूसरा।

(१३)

जुगल सैल-सिम हिमकर देखल
एक कमल दुइ जोति रे ॥१॥

फुललि मधुरि फुल सिंदुर लोटाएल
पाँति बइसलि गज-मोति रे ।
आज देखल जति के पतिआएत
अपुरुव विहि निरमान रे ॥३॥

विपरित कनक-कदलि-तर सोभित
थल-पंकज के रूप रे ।
तथहु मनोहर वाजन वाजए
जनि जागे मनसिज भूप रे ॥५॥

भनइ विद्यापति पूरव पुन तह
ऐसनि भजए रसमन्त रे ।
बुझल सकल रस नृप सिवसिंघ
लखिमा देइ कर कन्त रे ॥७॥

१—जुगल सैल=दो पहाड (कुचों की उपमा) । सिम=पीमा में, निकट । हिमकर=चन्द्रमा (मुख की उपमा) । कमल=(मुख की उपमा) । दुइ जोति=दो ज्योतियाँ (दो आँखे) । २—मधुरि फूल=एक तरह का लाल फूल । फुली हुई मधुरी (फूल) सिंदूर पर लोटती है और, दांत क्या है, गजमुक्ताओ की पंक्ति बैठी है । ४—विपरित=उलटा । कनक कदलि=(जांघ की उपमा) । थल पकज=स्थल कमल (पैरो की उपमा) । ५—तथहु=वहाँ भी । मनसिज=कामदेव । ६—पुन=पुण्य । ऐसनि=ऐसा । रसमत=रसवती, सुरसिका ।

[१४]

चाँद-सार लए मुख घटना करु
लोचन चकित चकोरे
अमिय धोय आँचर धनि पोछलि
दह दिसि भेल उँजोरे ॥२॥
कामिनि कोने गढ़ली ।
रूप सरुप मोयँ कहइत असँभव
लोचन लागि रहली ॥४॥
गुरु नितम्ब भरे चलए न पारए
माझ-खानि खीनि निमाई ।
भागि जाइत मनसिज धरि राखलि
त्रिवलि लता अरुझाई ॥६॥
भनइ विद्यापति अद्भुत कौतुक
ई सव वचन सरूपे ।
रूपनारायन ई रस जानथि
सिवसिंघ मिथिला भूपे ॥८॥

१—२, चन्द्रमा का सार भाग लेकर (विधाता ने राधा के) मुख की रचना की, (जिसे देखते ही चकोर की आंखें चकित हुईं । बाला ने (अपने मुख-चन्द्र को) अंचल से पोंछकर जो अमृत धो बहाया वही (चांदनी के रूप में) दशो दिशाओं में प्रकाशित हुआ । ३—कोने=किसने । गढली = गढा, रचा । ५—भरे = भार से । माझ खानि = मध्य भाग में (कटि) । खीनि = क्षीण, पतली । निमाई = निर्माण की । ६—त्रिवली-लता = त्रिवली = पेट में पडी तीन रेखाएं ।

[१५]

सुधामुखि के विहि निरमिल बाला।
अपरुब रूप मनोभयमगल
त्रिभुवन विजयी माला ॥२॥
सुन्दर बदन चारु अरु लोचन
काजर-रजित भेला।
कनक-कमल माझ काल-भुजगिनि
स्रीयुत खंजन खेला ॥४॥
नाभि-विवर सयँ लोम-लतावलि
भुजगि निसास-पियासा
नासा खगपति-चंचु भरम-भय
कुच-गिरि-संधि निवासा ॥६॥

१—के विहि = किस विधाता ने। निरमिल = निर्माण किया। २—मनोभव-मंगल = कामदेव का शुभ स्वरूप—"मनोभवमगलकलस-सहोदरे"-गीतगोविन्द। त्रिभुवन बिजयी माला= तीनो भुवनो को पराजित करनेवाली माला के समान। ३—४ बदन = मुखड़ा। भेला हुआ। माझ—मध्य में। स्रीयुत = सुन्दर। सुन्दर मुख मे सुन्दर काजल लगी आँखें है, मानो सोने के कमल (मुख) में काल-सर्पिणी (अजन) क्रीडा कर रही हो। अथवा मानो काल भुजगिनी रूपी आँखे कनक कमलरूपी मुख के बीच सुन्दर (स्रीयुत) खजन की तरह खेल रही हो। ५—६, विवर = विल, छेद। सयँ = से। लोम = लतावली = बाल-रूपी लताएँ, पंक्तिवद्ध बाल। भुजगि = सर्पिणी। निसास=साँस। खगपति = गरुड़ चंचु=चोच। नाभी रूपी बिल से पक्तिबद्ध बाल-रूपी सर्पिणी (नायिका

तिन वान मदन तेजल तिन भुवने
अवधि रहल दओ बाने ।
विधि वड़ दारुन वधए रसिकजन
सोपल तोहर नयाने ॥८॥
भनइ विद्यापति सुन वर जौवति
इह रस केओ पए जाने ।
राजा सिवसिघ रूपनरायन
लखिमा देइ रमाने ॥१०॥

की सुगधित) सांसो की प्यास में (आगे बढ़ी), किन्तु नुकीली नाक को गरुड़ की चोच समझकर डर से कुच रूपी (दो) पर्वतो के बीच के (संकीर्ण) मिलन-स्थान में आ बसी। ७ ८ तिन=तीन। तेजल=छोड़ा। अवधि=अवशिष्ट, बाकी। रहल=रहा। दओ=दो। वधए=वधने को, हत्या करने को तोहार=तुम्हारे। नयान=आँखें। कामदेव को पंचवाण कहते हैं, सो मदन ने अपने (पाँच वाणो में से) तीन बाण तो तीनों लोको में छोड़े, शेष उसके दो वाण रह गये। ब्रह्मा बड़ा ही निष्ठुर है, (उन बचे हुए दो वाणों को) रसिको की हत्या करने के लिये तुम्हारे नयनो को सौंप दिया। ९—=इह रस केओ पय जाने=यह रस कोई कोई ही जानता है। १०——देइ——देवी। रमाने=रमण, पति।

"हृदय-सिंधु मति सीप समाना। स्वाती सारद कहहिं सुजाना।
जो बरसै बर बारि-बिचारू। होहि 'कवित'-मुकुतामनि चारू॥"

[१६]

जाइत देखलि पथ नागरि सजनि गे
आगरि सुबुधि सेयानि ।
कनक-लता सनि सुन्दरि सजनि गे
विहि निरमाओल आनि ॥२॥

हस्ति-गमन जकाँ चलइत सजनि गे
देखइत राज-कुमारि ।
जिनकर एहनि सोहागिनि सजनि गे
पाओल पदारथ चारि ॥४॥

नील बसन तन घेरल सजनी गे
सिर लेल चिकुर सँभारि ।
तापर भमरा पिबए रस सजनि गे
बइसल पाँखि पसारि ॥६॥

केहरि सम कटि-गुन अछि सजनि गे
लोचन अम्बुज धारि ।
विद्यापति कबि गाओल सजनि गे
गुन पाओल अवधारि ॥८॥

१—नागरि=नगर-निवासिनी; सुचतुरा । आगरि=अग्रगण्या । २—सनि=समान निरमाओल आनि=लाकर बनाया । ३—जकाँ=ऐसा । ४—जिनकर=जिसकी । एहनि=ऐसी । ५—चिकुर केश । ६—तापर=उसपर । भमरा=भौंरा । ७—केहरि=सिंह । अछि=(अस्ति) है । अम्बुज—कमल । धारि=धारण करो, समझो । ८—अवधारि=निश्चय ।

[१७]

चिकुर - निकर तम - सम
पुनु आनन पुनिम ससी।
नयन - पंकज के पतिआओत
एक ठाम रहु वसी ॥२॥
आज मोयँ देखलि बारा।
लुबुध मानस, चालक मयन
कर की परकारा ॥४॥
सहज सुन्दर गोर कलेवर
पीन पयोधर सिरी।
कनक-लता अति बिपरित
फरल जुगल गिरी ॥६॥
भन विद्यापति विहि क घटन
के न अद्भुत जान।
राय सिवसिघ रूपनरायन
लखिमा देइ रमान ॥८॥

१—२—चिकुर निकर=केश समूह। पुनिम=पूर्णिमा का। ठाम=स्थान। केश समूह अंधकार के समान है, फिर, मुख पूर्णिमा के चन्द्र के समान और नयन कमल के (समान)—कौन विश्वास करेगा (कि ये सब परस्पर-विरोधी पदार्थ) एक स्थान पर बसते हैं। मोयँ= मैंने। बारा=बाला। ४—लुबुध=लुब्ध, अनुरक्त। चालक = संचालन करनेवाला। मयन—काम। की परकारा = किस प्रकार। ५—सिरी= श्री, शोभायुक्त। ६—फरल = फला। ७—घटन = सृष्टि।

[१८]

सजनी, अपरुप पेखल रामा ।
कनक - लता अवलम्बन ऊअल
हरिन - हीन हिमधामा ॥२॥
नयन-नलिनि दओ अंजन रंजइ
भौंह विभंग - विलासा ।
चकित चकोर - जोर विधि बाँधल
केवल काजर पासा ॥४॥
गिरिबर-गरुअ पयोधर-परसित
गिम गज-मोति क हारा ।
काम कम्बु भरि कनक - सम्भु परि
ढारत सुरसरि - धारा ॥६॥
पएसि पयाग जाग सत जागइ
सोइ पावए वहुभागी ।
बिद्यापति कह गोकुल-नायक
गोपी जन अनुरागी ॥८॥

१—अपरुप = अपूर्व । पेखल = देखा । रामा=सुन्दरी । २—कनक-लता=सोने की लता (देह) । ऊअल=उदित हुआ । हरिन-हीन हिमधामा = निष्कलंक चन्द्र (मुख) । ३—नलिनी = कमलिनी । दओं = दो । भौंह विभग-विलासा = कुटिल कटीली भौंहो—भवो—में भाव-भगी । ४—जोर = जोड़ा । वांधल = बाँधा है । पास=पास में, रस्सी मे । ५—६ गिरिवर गरुअ = पहाड़ के ऐसे भारी । पयोधर = कुच । गिम = ग्रीवा, कण्ठ । गजमोतिक = गजमुक्ता की । कम्बु=शख । कनक = सोना । पहाड़

[१६]

कनक-लता अरविन्दा ।
दमना माँझ उगल जनि चन्दा ॥२॥

केहु कहै सैवल छपला ।
केहु वोले नहि नहि मेघे झपला ॥४॥

केहु कहे भमए भमरा ।
केहु वोले नहि नहि चरए चकोरा ॥६॥

संसय परल सव देखी ।
केहु वोलए ताहि जुगुति विसेखी ॥८॥

भनइ विद्यापति गावे ।
वड़ पुन गुनमति पुनमत पावे ॥१०॥

ऐसे उत्तुंग कुचो को स्पर्श करती हुई गले में गजमुक्ताओ की माला है, मानो, कामदेव शंख (कण्ठ) मे भरकर, सोने के महादेव (कुचो) पर गंगा की धारा (माला) ढार रहा हो ७—पएसि = पैठकर, जाकर । पयाग—प्रयाग में । जाग = यज्ञ । सत = शत, सौ । (जो) प्रयाग में जाकर सैकड़ों यज्ञ करे, वही वहुभाग्यशाली (इस रमणी को) प्राप्त करे ।

१—२, दमना = द्रोणलता । माँझ = में । उगल = उदित हुआ । जनि = मानो । सोने की लता पर कमल खिला है या द्रोण-लता पर चन्द्रमा उगा है । ३—केहु = कोई । कहै = कहता है । सैवल = शैवल, सेंवार । छपला = छिपा हुआ । ४—५, झपला = ढँपा हुआ । ५—भमए भमरा = भौंरा भ्रमण कर रहा है । ६—चरए = चर रहा है, दाना चुग रहा है । ७—परल = पड़ गया । १०—पुन = पुण्य से । पुनमत = पुण्यवंत ।

[२०]

कबरी-भय चामरि गिरि-कन्दर
मुख-भय चाँद अकासे ।
हरिन नयन-भय, सर-भय कोकिल
गति-भय गज वनवासे ॥२॥

सुन्दरि, किए मोहि सँभासि न जासि ।
तुअ डर इह सब दूरहि पलायल
तुहुँ पुन काहि डरासि ॥४॥

कुच-भय कमल-कोरक जल मुदि रहु
घट परवेस हुतासे ।
दाड़िम सिरिफल गगन वास करु
सम्भु गरल 'करु ग्रासे ॥६॥

भुज भय पंक मृनाल नुकाएल
कर-भय किसलय काँपे ।
कबि-सेखर भन कत कत ऐसन
कहब मदन परतापे ॥७॥

१—कबरी = केश । चामरि = चँवरवाली गौ । २—सर = स्वर, बोली । ३—किए=क्यो । सँभासि=बातचीत करके । जासि=जाती है । सुन्दरी, क्यो मुझसे बाते नहीं कर जाती ? ४—पलायल=भाग गया । ५—कमल-कोरक=कमल की कली । घट परवेस हुतासे=घड़ा अग्नि में प्रवेश करता है । ६—दाडिम=अनार । सिरिफल=बेल । गगन = आकाश । सम्भु = शिव । गरल = विष । ६—मृनाल = कमल-नाल । नुकायल = छिप गया । कर = हाथ । किसलय=नवीन पत्ता ।